परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद संकटमोचन श्री शान्तिनाथ विधान

कृतिकार
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
संकट मोचन
श्री शान्तिनाथ विधान
माण्डला

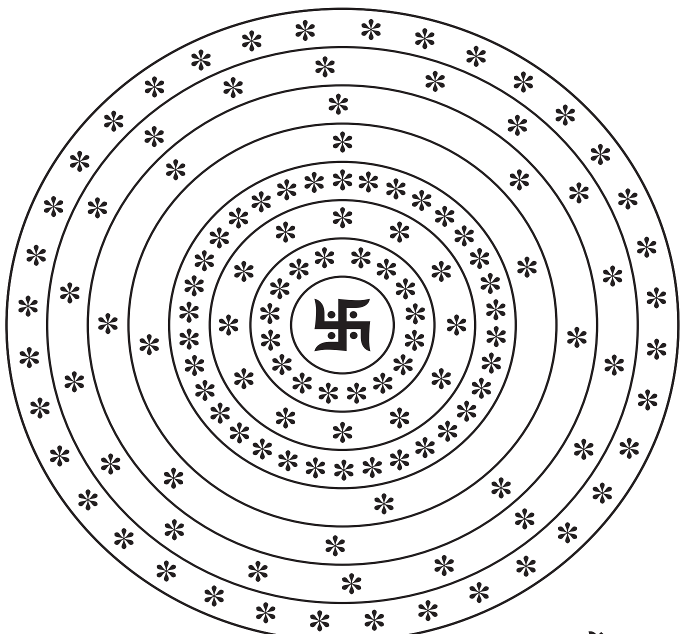

प्रथम वलय में – 16 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 12 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 34 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 4 अर्घ्य
पंचम वलय में – 8 अर्घ्य
षष्ठम् वलय में – 18 अर्घ्य
सप्तम् वलय में – 36 अर्घ्य
कुल 128 अर्घ्य

:: रचयिता ::
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य 108
श्री विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद संकट मोचन श्री शान्तिनाथ विधान**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. सपना दीदी 9829127533

संयोजन : ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : प्रथम 2017 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 31/- (पुन: प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : **1. निर्मलकुमार गोधा,**
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो. : 9414812008

2. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

3. **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,
नियर लाल बत्ती चौक
गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

4. **सुरेश सेठी**
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरी जयपुर (राज.) 9413336017

:: अर्थ सौजन्य ::
श्रीमती मोहिनीदेवी धर्मपत्नी श्री बाबू लाल जी बरमुन्डा
श्रीमती टीना जैन धर्मपत्नी श्री हितेश कुमार बरमुन्डा
सुपुत्री जिनवाणी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में
क्लॉथ मर्चेन्ट, नेनवां. मो.: 9460194329

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9818394651, 9811374961, 9811363613 • E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

''श्री शान्तिनाथ व्रत विधि''

श्री शान्तिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन पद के धारक महान हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शान्तिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शान्तिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से एक महिमापूर्ण हैं। उन एक-एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शान्ति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्वकष्ट संकट आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में परिवार में मंगलमय वातावरण होगा देश में सुभिक्ष होगा, राजा प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। **'श्री पूज्यवाद स्वामी'** जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी **"नेत्र ज्योति मंद"** हो गई, उसी क्षण उन्होंने शान्तिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शान्तिनाथ भक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही **''दृष्टिं प्रसन्नां कुरू''** बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई।

व्रत विधि–इस व्रत को किसी माह की शुक्ला अष्टमी से प्रारंभ कर लगातार प्रत्येक मास की दो-दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी यह व्रत करना चाहिए। व्रत की उत्तम विधि उपवास मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना एवं व्रत के दिन शान्ति भक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना श्री शान्तिनाथ भगवान की पूजा जाप्य आादि करना। व्रत पूर्ण कर उद्यापन में **प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह **श्री शान्तिनाथ विधान** उत्साहपूर्वक करना। भगवान् शान्तिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शान्ति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना अपनी शक्ति के अनुसार 16-16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

जब भी शुक्ल पक्ष सोलह दिन का हो तो विधिवत 16 दिन का श्री शान्तिनाथ विधान का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए।

–मुनि विशाल सागर

शान्ति पुष्प

दोहा–धर्म सुखों की खान हैं, धर्म है मित्र समान।
धर्म श्रेष्ठ रक्षक रहा, तीनों लोक महान॥

हमारे पूज्य आचार्यों ने अपनी पीयूष देशना में कहा है। सब सुखों की खानि हित को करने वाला धर्म है। बुद्धिमान लोग धर्म का संचय करते हैं धर्म से ही मोक्ष सुख मिलता है इसलिए धर्म को नमस्कार हो। संसारी प्राणियों का धर्म से भिन्न कोई मित्र नहीं है। मैं प्रतिदिन धर्म में मन लगाता हूँ धर्म मेरी रक्षा करो।

आज इंसान भौतिकता की अंधी दौड़ की जिन्दगी जी रहा है जैसे उसे कुछ मिलने वाला हो रात का स्वप्न आँख खुलते ही समाप्त हो जाता है, हाथ मलते ही रह जाता है। यह संसार आपति विपत्ति का पिटारा है। श्रावक जब किसी विपित्त में पड़ता है तब भगवान का सुमरन करता।

दुख में सुमरन सब करें सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमरन करे, तो दुख काहे को होय॥

जिस–जिस ने प्रभु भक्ति सच्चे मन से की है उसकी सारी मुरादें पूरी हुई आपको सुनने में, पढ़ने में आता है मानतुंगाचार्य धनञ्जय सेठ सती सीता मैना आदि ने विपत्ति पढ़ने पर धर्म नहीं छोड़ा अपने संकल्प पर दृढ़ रहे तो भगवान ने भी उनकी रक्षा की।

प्रभु दर्शन से नूर मिलता है, गमें दिल को सरूर मिलता है।
जो भगवान की भक्ति करता है, उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है।

परम पूज्य आचार्य भगवन्! **विशद सागर जी** ने यहाँ शान्ति विधान की रचना करके हमें भक्ति करने का साधन दिया सभी लोग शान्ति विधान हमेशा से ही करते रहे मैंने भी कभी और विधानों का नाम ही सुना आचार्य भगवन् ने अपनी प्रज्ञा से अनेकों–अनेक विधानों को श्रावकों तक पहुँचाने का उपकार किया यह जीव किसी न किसी तरीके से धर्म से जुड़ा रहे धर्म से विस्मृत न हो जाए।

पंखों में अगर उड़ान है तो आसमान मुझसे दूर नहीं।
श्रद्धा में अगर जान है तो भगवान हमसे दूर नहीं॥

पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों त्रय भक्तिपूर्वक नमोस्तु।

–ब्र. सपना दीदी (संघस्थ आचार्य श्री विशद सागर जी)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शान्तिधारा...

दोहा– **पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है। पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।

सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शान्ति भक्ति

चरण शरण को प्राप्त करें न, भव्य जीव तव हे भगवान्!
भव सागर है कारण जिसमें, अरु विचित्र कर्मों की खान॥
अति दैदीप्य उग्र किरणों से, भूमण्डल सारा ढक जाय।
ग्रीष्म रवी ज्यों चन्द्र किरण अरु, जल छाया से नेह कराय॥1॥
ज्यों क्रोधित फणधर डसने से, दुर्जय विष ज्वाला के योग।
विद्या औषधि मंत्र हवन जल, शांत होय पाकर संयोग॥
तव चरणाम्बुज की स्तुति से, शीघ्र विघ्न सब होवें दूर।
शांत होय तन की बाधाएँ, क्या विस्मय इसमें भरपूर॥2॥
तप्त स्वर्ण गिरि की कांति को, फीका करती जिनकी देह।
जीवों की पीड़ा क्षय होती, प्रणत पाद करने से येह॥
उदित रवी किरणों की दीप्ती, के आघात से निकल रही।
नेत्र कांति को हरने वाली, रात शीघ्र क्षय रूप कही॥3॥
त्रय लोकेश्वर के विनाश से, विजय प्राप्त हो गये अति क्रूर।
उस कराल की दावाग्नि से, जग में बच पाना अति दूर॥
नाना शतक जन्म के अन्दर, संसारी जीवों के अग्र।
पाद पद्म द्वय स्तुति सरिता, क्या वरण न करे समग्र॥4॥
लोकालोक में एक निरन्तर, विस्तृत ज्ञान मूर्ति हे नाथ!।
नाना रत्न जड़ित सुन्दर शुभ, श्वेत छत्र त्रय जिनके माथ॥
प्रभु के चरण युगल की स्तुति, रव से रोग शीघ्र हों दूर।
मात्र सिंह के गर्जन से ज्यों, गज भागें भय से भरपूर॥5॥
दिव्य स्त्री के नयन प्रिय हे!, विपुल श्री चूड़ामणि श्रेष्ठ।
बाल रवी के द्युति हारी शुभ, भामण्डल युत भवि के इष्ट॥
अव्याबाध अचिन्त्य अतुल शुभ, अनुपम सारभूत अविनाश।
तव चरणारविन्द युगलों की, स्तुति से हो सुख में वास॥6॥
सूर्य तेज किरणों से जब तक, नहीं उदित हो करें प्रकाश।
पंकज वन इस लोक में तब तक, निद्रा भार के श्रम से खास॥
चरण द्वय रवि के प्रसाद का, उदय नहीं हो हे भगवन!।
तब तक जीवों का समूह यह, प्रायः पाप धरे बहु जान॥7॥
शान्ति मनः शान्ति के इच्छुक, पृथ्वी तल पर शान्ति जिनेश।
बहु प्राणी तव चरण कमल के, आश्रय से हो शांत विशेष॥
तव चरणों को देव मान प्रभु, भक्त सदा भक्ती के साथ।
शान्त्यष्टक सम्यक्त्व हेतु शुभ, निर्मल दया भाव हो नाथ।8॥

चन्द्र समान सुमुख अति निर्मल, संयम व्रतधारी गुणवान।
शील अठारह सहस देह में, लक्षण इक सौ आठ महान!॥
कमलाशन पर शोभित हैं जो, जिन उत्तम हे शांतीनाथ!।
शत् इन्द्रों से पूज्य आपके, चरणों झुका रहे हम माथ॥9॥
ईप्सित चक्रवर्तियों में से, चक्रवर्ति थे जो पञ्चम।
इन्द्र नरेन्द्रों के समूह से, पूजित रहे विशद हरदम॥
शांती करने वाले जग में, शान्तिनाथ है जिनका नाम।
महा शान्ति की इच्छा से मैं, शांती जिन को करूँ प्रणाम॥10॥
दिव्यतरू सुर पुष्प वृष्टि हो, दिव्य ध्वनि शुभ सिंहासन।
दोनों ओर चँवर ढुरते हैं, भामण्डल अति मन भावन॥
दुन्दुभि नाद होय छत्र त्रय, शोभित होते शान्तिनाथ।
प्रातिहार्य से युक्त श्री जिन, को हम झुका रहे हैं माथ॥11॥
सर्व जगत् में पूजयनीय हैं, शांती कर हे शान्तिनाथ!।
विशद भाव से वन्दन करता, चरण झुकाऊँ अपना माथ॥
सर्व जगत् को शीघ्र करो हे, शान्तिनाथ! शुभ शान्ति प्रदान।
स्तुति पढ़ने वाला हूँ मैं, दीजे मुझे शान्ति का दान॥12॥
सुरगण से स्तुत हैं जिनके, चरण कमल सुन्दर छविमान।
कर्णाभरण हार कुण्डल से, रत्न मुकुट से जिनकी शान॥
इन्द्र पूजते हैं जिनको वे, श्रेष्ठ वंश के जगत् प्रदीप।
तीर्थंकर श्री शांती जिन मम्, शांती देने रहें समीप॥13॥
धर्म आयतन के रक्षक हैं, पूजा करते भली प्रकार।
मुनियों के हैं इन्द्र तपस्वी, श्रेष्ठ जग के आचार्य॥
देश राष्ट्र राजा को अनुपम, नगरवासियों को भी साथ।
शान्ति दीजिए शान्ति प्रदाता, हे जिनेन्द्र! श्री शांतीनाथ॥14॥
हों कल्याण प्रजा का सारी, धार्मिक हो राजा बलवान।
जल वृष्टी हो यथा समय पर, जग में हो व्याधी की हान॥
चौर मारि दुर्भिक्ष जगत् में, न हो क्षण के लिए हे नाथ!
सर्व सुखोंकर धर्म चक्रशुभ, नित्य प्रभावशाली हो साथ॥15॥
यहाँ अनुग्रह से जिनके शुभ, मोक्ष के इच्छुक मुनिवर श्रेष्ठ।
रत्नत्रय निर्दोष प्रकाशित, द्रव्य प्राप्त हो जाए यथेष्ठ॥
प्राप्त काल हो तप का साधक, भाव प्राप्त शुभ उत्तम देश।
प्राप्त काल हो तप का साधक, भाव प्राप्त हों शुद्ध विशेष॥16॥
केवल ज्ञान रवी से शोभित, कर्म घातिया कीन्हे नाश।
वृषभ आदि तीर्थंकर जग में, शांती में देवे शुभ वास॥17॥

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना

जिनका गौरव तीन लोक में, भक्ति सहित गाया जाता।
जिनके चरणों में हर मानव, खुश होकर के सिरनाता॥
शान्ति प्रदाता शान्तिनाथ पद, करते हम शत् शत् वन्दन।
सुरभित पुष्पों से करते हम, विशद हृदय में आह्वानन्॥

दोहा- आओ तिष्ठो मम हृदय, शांतिनाथ भगवान।
करते हैं हम अर्चना, करो मेरा कल्याण

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(गीता छन्द)

भर नीर निरमल कनक झारी, अर्चना को लाये हैं।
जन्मादि रोग विनाश को हम, धार देने आये हैं॥
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हो सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन॥1॥

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चन्दनादि सुरभि केसर, से यहाँ पूजा करें।
जो है अनादी ताप भव का, शीघ्र उसको परिहरें॥
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन॥2॥

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अमल तन्दुल फैन सम शुभ, अर्चना के भाव से।
चरणों चढ़ाते हैं यहाँ पर, हर्षमय हो चाव से॥

श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन।।3।।

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले पुष्प सुरभित अरु सुवासित, अर्चना करते यहाँ।
हो काम बाधा नाश मेरी, दुखःदायी जो महा।।
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन।।4।।

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सद्य बनाय घृत के, थाल में भर लाए हैं।
हम क्षुधा बाधा नाश करने, को यहाँ पर आए हैं।।
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हो सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन।।5।।

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीप कृत्रिम हम बनाकर, कर रहे पूजा यहाँ।
अब मोह का तम नाश हो मम, जो भ्रमाए यह जहाँ।।
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन।।6।।

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोह अधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धूप अग्नी में जले त्यों, कर्म मेरे नाश हों।
हम धूप खेते हैं सुवासित, मुक्ति पद में वास हो।।
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन।।7।।

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस ताजे श्रेष्ठ अनुपम, हम यहाँ पर लाए हैं।
अब मोक्ष फल हो प्राप्त हमको, अर्चना को आए हैं।।

श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन॥8॥

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय महा मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि द्रव्य आठों, से बनाया अर्घ है।
लक्ष्य हमने यह बनाया, प्राप्त करना अनर्घ है॥
श्री शान्ति जिनकी अर्चना से, कर्म हों सारे समन।
अतः चरणों में विशद हम, कर रहे शत शत नमन॥9॥

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परम सुगन्धित नीर से, करते शांती धार।
सुख-शान्ति आनन्द हो, शांती मिले अपार॥

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प महान।
नव गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तिष्ठे हैं स्वभाव में, जिनवर शान्तीनाथ।
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाते माथ।।

''चौपाई''

शान्तिनाथ शान्ती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन-जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
सर्वार्थसिद्धी से चय आये, हस्तिनागपुर धन्य बनाए।
हुई रत्न दृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।1।।

इन्द्र राज ऐरावत लाया, प्रभु पद में तव शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया, उसने अतिशय पुण्य कमाया।
आनन्दोत्सव महत् मनाया, तन मन से जो शुभ हर्षाया।
प्रभु की भक्ति की भारी, हर्षित हुए सभी नर नारी।।2।।

प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवल ज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।
तीर्थ बने कई अतिशयकारी, जो हैं भव्यों के उपकारी।
वीतराग मुद्रा प्रभु पाए, भव्य भक्ति करके हर्षाए।।3।।

जिन चरणों के श्रद्धाधारी, जय जयकार कराते भारी।
आके अतिशय पुण्य कमाते, अपने जो सौभाग्य जगाते।।
मन में यही भावना भाएँ, बार-बार हम दर्शन पाएँ।
दर्शन कर श्रद्धान जगाएँ, पूजा करके ज्ञान उपाए।।4।।

करें आरती मंगलकारी, जो कर्मों की नाशन हारी।
हे शरणागत विस्मयकारी, शरण आपकी हो शुभकारी॥
मोक्ष महल जब तक ना पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
'विशद' भावना रही हमारी पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी॥5॥

दोहा– शान्ति पाने हम यहाँ, आए शांतीनाथ।
पूर्ण करों आशा मेरी, झुका रहे पद माथा॥

ॐ ह्रीं संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा– शान्तीनाथ के पद युगल, झुका रहे हम शीश।
मुक्ती हमको दीजिए, मुक्ति पद के ईश॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

''सोरठा''

सोलह कारण भाय, तीर्थंकर पदवी लहे।
विशद भावना भाय, शिव सुख पा सिद्धी मिले॥

(अथ प्रथम वलये कमले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

शान्तिनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ!
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ॥
दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''सोलह कारण भावना के अर्घ्य''

दोहा– मिथ्यादर्श विनाशकर, सम्यक्‌दर्शन पाय।
आत्मध्यान में लीनता, दर्श विशुद्धि कहाय।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनशुद्धिप्राप्तकारकाय दर्शनविशुद्धिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

देव शास्त्र गुरु की विनय, करते हैं जो लोग।
विशद विनय सम्पन्नता, का पाते संयोग।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयगुणप्रापणसमर्थाय विनयसंपन्नताभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पंच महाव्रत शील जो, पालें दोष विहीन।
निरतिचार व्रत शील में, रहते हैं वह लीन।।3।।

ॐ ह्रीं निरतिचारव्रतशीलादिपालनबुद्धिप्रदायकाय शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भेद ज्ञान करके विशद, रहें ज्ञान में लीन।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग के, रहते सदा अधीन।।4।।

ॐ ह्रीं सततज्ञानाभ्यासकरणसमर्थाय अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो संसार शरीर से, त्यागें ममता भाव।
पाते हैं संवेग वह, धर्म निरत स्वभाव।।5।।

ॐ ह्रीं संसारशरीरभोगवैराग्यकरणबुद्धिप्रदायकाय संवेगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अपनी शक्ति विचार कर, करें द्रव्य का त्याग।
यह शक्ती तस्त्याग है, करें धर्म अनुराग।।6।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारणबुद्धिकरणसमर्थाय शक्तितस्त्यागभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वादश तप के भेद हैं, तपें शक्ति अनुसार।
शक्ती तस्तप यह कहा, नर जीवन का सार।।7।।

ॐ ह्रीं नानाविधतपश्चरणकरणशक्तिप्रदायकाय शक्तितस्तपोभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

धारें समता भाव जो, रहें समाधी लीन।
यही समाधी भावना, राग द्वेष से हीन।।8।।

ॐ ह्रीं साधुगणधर्म्यशुक्लध्यानलीनभक्तिशक्तिप्रापकाय साधुसमाधिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधक करते साधना, उसमें बाधा होय।
वैय्यावृत्ती यह कही, दूर करें जो कोय।।9।।

ॐ ह्रीं गुरुसेवाकरणशक्तिप्रदायकाय वैयावृत्यकरणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कर्म घातिया नाश कर, हुए प्रभु अरहंत।
अर्हत् भक्ती कर बने, मुक्तिवधु के कंत।।10।।

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलदानसमर्थाय अर्हद्भक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शिक्षा दीक्षा दे रहे, पालें पंचाचार।
आचार्य भक्ती कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।11।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रधारणशक्तिदानसमर्थाय आचार्यभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्ञाता ग्यारह अंग के, चौदह पूरब धार।
उपाध्याय भक्ती शुभम्, करके हो भव पार।।12।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानपूर्णकरणसमर्थाय बहुश्रुतभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनवर की वाणी विमल, करती मोह विनाश।
प्रवचन भक्ती जो करें, पावें ज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघभक्तिभावनावर्द्धकाय प्रवचनभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आवश्यक कर्तव्य को, पालें धार विवेक।
आवश्यक अपरिहारिणी, कही भावना नेक।।14।।

ॐ ह्रीं षडावश्यकक्रियाकरणशक्तिप्रदाय आवश्यकापरिहाणिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन शासन जिन धर्म का, जग में करें प्रकाश।
करके धर्म प्रभावना, करें मोह तम नाश।।15।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावनाकरणबुद्धिवृद्धिंकराय मार्गप्रभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधर्मी से नेह धर, कुटिल भाव से हीन।
वात्सल्य शुभ भावना, धारें सदगुण लीन।।16।।

ॐ ह्रीं साधर्मिवात्सल्यबुद्धिकरणसमर्थाय प्रवचनवत्सलत्वभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त संकट मोचन श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पूर्णार्घ्य

सोलह कारण भावना, के यह सोलह अर्घ्य।
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ्य।।
तीर्थंकर पद के लिए, सोलह भावना भाय।
बन के तीर्थंकर प्रभू, मोक्ष महाफल पाय।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि प्रवचन वत्सलत्वपर्यन्त षोडश कारण भावना बलेन तीर्थंकर पद प्राप्त मनोवाञ्छित फल प्रदाय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतयेशातिधारा, दिव्य पुष्पांजलिक्षिपेत।।

द्वितीय वलयः

दोहा– भाकर बारह भावना, पाते हैं वैराग्य।
वन्दन कर जिनराज पद, जगें भव्य के भाग्य।।

(अथ द्वितीय वलये कमले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

शान्तिनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ!
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ।।

दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ

जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

बारह भावना के अर्घ्य

(विष्णुपद छन्द)

धन परिजन गृह सम्पदादि सब, 'अध्रुव' कहलाए।
मोही प्राणी इनको पाकर, अतिशय हर्षाए।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनित्य भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात पिता सुत दारा भाई, 'शरण नहीं' कोई।
ज्ञानी जीव करें नित चिन्तन, इस प्रकार सोई।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।2।।

ॐ ह्रीं अशरण भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह 'संसार' असार बताया, इसमें सार नहीं।
चार गती में जाकर देखा, सुख ना मिला कहीं।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।3।।

ॐ ह्रीं संसार भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे मरे अकेला प्राणी, ऋषियों ने गाया।
फिर भी पर को अपना माने, रही मोह माया।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।4।।

ॐ ह्रीं एकत्व भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देहादिक सब अन्य जीव से, सत्य यही गाया।
फिर भी पर में राग लगाए, मोह की ये माया॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥5॥

ॐ ह्रीं अन्यत्व भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से बनी देह यह मैली, नव मल द्वार बहे।
कर्मोदय से प्राणी मोहित, अपना इसे कहे॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥6॥

ॐ ह्रीं अशुचि भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादिक के कारण प्राणी, आस्रव नित्य करें।
उसी कर्म के फल भव-भव में, अतिशय दु:ख भरें॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥7॥

ॐ ह्रीं आस्रव भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रत पाने वाले, के संवर होवे।
लगे पूर्व के कर्म जीव के, अपने वह खोवे॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥8॥

ॐ ह्रीं संवर भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा तप के द्वारा, होती है भाई।
अनुक्रम से शिव पद में कारण, होवे सुखदायी॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥9॥

ॐ ह्रीं निर्जरा भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व अधो अरु मध्य लोक यह, पुरुषाकार कहा।
कर्मोदय से प्राणी इसमें, भ्रमता सदा रहा।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।10।।

ॐ ह्रीं लोक भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अविरति योग कषाएँ, प्राणी सब पावें।
बोधी दुर्लभ रही लोक में, जो ना प्रगटावें।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।11।।

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभ भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव दुख से छुटकारा देने, वाला धर्म कहा।
जिसको पाना विशद हमारा, अन्तिम लक्ष्य रहा।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।12।।

ॐ ह्रीं धर्म भावना बलेन वैराग्योत्पत्ति प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- भावें बारह भावना, तीर्थंकर भगवान।
संयम के पथ पर बढ़ें, पावें केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं द्वादश भावना प्राप्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– होती पूरी आश है, शान्तिनाथ के पास।
मंगलमय जीवन बने, होवे मुक्ती वास।।

(अथ तृतीय वलये कमले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

शान्तिनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ!
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ।।
दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

10 जन्म के अतिशय

(सखी छन्द)

प्रभु अतिशय रूप सुपावें, लख कामदेव शर्मावें।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी।।1।।

ॐ ह्रीं इन्द्रनरेन्द्र-धरणेन्द्रखगेन्द्रनेत्रमनोहारिसौंदर्य समन्विताय अनुपमरूप सहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में सुगंध प्रभु पाए, नर नारी सुर हर्षाए।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी।।2।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुयशोविस्तारकाय सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में न स्वेद रहा है, यह अतिशय एक कहा है।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी।।3।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वास्थ्यप्रदायकाय निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में मलमूत्र न होई, न रहे अशुद्धि कोई।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥4॥

ॐ ह्रीं स्वात्मविशुद्धिप्रदायकाय मलविरहितसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन उचारें, जीवों में करुणा धारें।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥5॥

ॐ ह्रीं समरसीभावप्रदायकाय क्षीरसमरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु बल अतुल्य के धारी, है शक्ती जग से न्यारी।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥6॥

ॐ ह्रीं निजात्मशक्तिवर्धकाय वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है श्वेत रुधिर प्रभु तन में, वात्सल्य रहे जन-जन में
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥7॥

ॐ ह्रीं स्वात्मसौख्यप्रदायकाय समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु लक्षण एक सहस तन, दर्शन कर हर्षित हो मन।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिवारकाय अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षण सहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुष्क पाए संस्थाना, तन हीनाधिक नहिं माना।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥9॥

ॐ ह्रीं आत्मबलवर्धकाय अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ व्रजवृषभ कहलाए, प्रभु उत्तम संहनन पाए।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥10॥

ॐ ह्रीं कण्ठांकुठितफलप्रदाय प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

(अडिल्य छन्द)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के, दश कहे।
योजन शत् इक में, सुभिक्षता हो रहे॥
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं॥11॥

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेंमकराय गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभु चले सह्यो रह्यो जिस ओर, देवगण अनुसरें॥
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं॥12॥

ॐ ह्रीं उत्तमगतिप्रदायकाय गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का हो गमन सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं कोय मारने पाय जी॥
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं॥13॥

ॐ ह्रीं अनुकंपागुणविकसिताय प्रातिबाधाभावकेवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत, उपसर्ग चऊ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के, ऊपर नहीं रहे॥
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं॥14॥

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिफलप्रदायकाय कवलाहाराभाव केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से, जग दुख सहयो।
सो जिन कवलाहार जान, सब पर हरयो॥

केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारणसमर्थाय उपसर्गाभाव केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में, श्री जिनवर स्थित रहे।
पूर्व दिशा मुख होय, चतुर्दिक दिख रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनोहराय चतुर्मुखत्व केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल देश, भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य, सकल जानत सही।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं भगवच्छत्रछायाप्रापकाय छायारहित केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्‌गल के, अणु से बन रहयो।
पड़े नहीं छाया, महा अचरज भयो।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रप्रदायकाय अक्षस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश नहिं वृद्धि करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, नहीं प्रभु यह गुण धरें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञानप्रापकाय सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टी नाशा रहे, कोई हेतु मिलें॥
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं॥20॥

ॐ ह्रीं सर्वजनताभयदानदायकाय नखकेशवृद्धिरहित केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(हरिगीता छन्द)

रही भाषा अर्द्धमागध, सभी को सुखकार है।
वाणी है ॐकारमय शुभ, धर्म की आधार है॥
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं॥21॥

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्राप्तिकराय अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनि केवलज्ञानातिशयगुण मंडिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के सब प्राणियों में, भाव मैत्री के जगें।
धर्म के दीपक जहां में, आप ही शुभ जग-मगें॥
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं॥22॥

ॐ ह्रीं सर्वजनमन:कमलविकासकाय सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणाम देवोपनीतातिशय विभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतू के फूल फल शुभ, स्वयं ही खिलते जहां।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, आगमन होवे वहां॥
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं॥23॥

ॐ ह्रीं उष्णपित्तादिरोगनिवारकाय वायुकुमारोपशमितधूलिकण्टकादिदेवोप-नीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि दर्पण वत् चमकती, पद पड़ें प्रभु के जहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, गमन होता है वहाँ॥

अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वजनविरोधनिवारकाय सर्वजनमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन सुरभित शुभ सुगंधित, बहे अति मन मोहनी।
भव्य जीवों की सुभाषित, रहे अति शुभ सोहनी।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक, जगत मंगलकार हैं।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वकष्टनिवारकाय आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीताशिय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में आनन्द कारण, है प्रभु का आगमन।
भव्य प्राणी विनत होके, प्राप्त करते हैं शरण।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।26।।

ॐ ह्रीं स्फोटकादिनानाव्याधिनिवारकाय मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय रक्तापित्त संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि कंटक रहित हो शुभ, जहाँ प्रभु करते गमन।
भव्यप्राणी भावसे करते, चरण शत्-शत् नमन्।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।27।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तमफलप्रदानसमर्थाय फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय-जयकार होता, जीव सुखमय हों सभी।
धर्म की शुभ भावना से, दुःखमय न हों कभी।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।28।।

ॐ ह्रीं परमसौख्यप्रदायकाय सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करते, देव मिलकर के सभी।
झूमकर के नृत्य करते, भाव से सुर नर सभी।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।29।।

ॐ ह्रीं प्रतिकूलजनापसारकाय अनुकूलविहरणवायुत्वदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू के पद तल कमल की, देवगण रचना करें।
हों जगत जन सुखी सारे, और की बाधा हरें।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।30।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुधारसप्रदायकाय निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादिदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन शुभ हो जाए निर्मल, जहाँ प्रभु का हो गमन।
सब दिशाओं को स्वयं ही, देव कर देते चमन।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।31।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिग्यशोविस्तारकाय शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब दिशाएँ धूम से हों, रहित निर्मल अति विमल।
आगमन हो जहाँ प्रभु का, क्षेत्र वह होवे अमल।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।32।।

ॐ ह्रीं परमस्वास्थ्यविधायकाय सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्वदेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, प्रभू का जब हो गमन।
भव्य जन भक्ती से आकर, करें चरणों में नमन्।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।33।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मबुद्धिविवर्धकाय यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्र चतुष्टयदेवोप-नीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, देव भक्ती भाव से।
कर रहे अर्चा प्रभु की, मिल सभी सुर चाव से।।
अतिशय प्रभू जी प्राप्त करते, देवकृत शुभकार हैं।
श्री शान्ति जिन शांती प्रदायक जगत मंगलकार हैं।।34।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमणनिवारणसमर्थाय तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशय गुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, उभयलक्ष्मी पाय।
समवशरण में राजते, तीर्थंकर जिनराय।।

ॐ ह्रीं चतुस्त्रिंशत् अतिशय समन्विताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, दिव्यपुष्पाजलिक्षिपेत)

चतुर्थ वलयः

दोहा– अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, बनते जिन अरहंत।
शिव पथके राही बनें, करें कर्म सब अंत।।

(अथ चतुर्थ वलये कमले पुष्पांजलि क्षिपेत)

स्थापना

शांतीनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ।
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ।।
दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(चौबोला छन्द)

क्रोध लोभ मद माया जीते, आतम ध्यान लगाया है।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवल ज्ञान जगाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तज्ञानगुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महल का ध्येय बनाकर, क्षायिक दर्शन पाया है।
क्षमाभाव को धारण करके, आतम धर्म जगाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तदर्शनगुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनीय नाश किए, क्षायिक सम्यक्त्व जगाया है
भव सागर से पार हुए प्रभु, सुख अनंत उपजाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतसौख्यगुणसमन्विताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जान के चेतन की शक्ती को, संयम से प्रगटाया है।
अंतराय का नाश किए प्रभु, वीर्य अनंत उपजाया है।।
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभु के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतवीर्यगुणविभूषिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(शम्भू छन्द)

अनन्त चतुष्टय पाने वाले, हुए लोक में आप महान्।
कर्म घातिया नाश किए फिर, बने जहाँ में आप प्रधान।।

शांती जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अनंत-चतुष्टय गुण समन्विताय मनोवाञ्छित फल प्रदाय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वमापीति स्वाहा।

(शांतये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत)

पंचम वलय

दोहा– प्रातिहार्य वसु पाए हैं, श्री जिन शांतीनाथ।
विशद अष्ट गुण पाएँ हम, झुका रहे पद माथ॥

(अथ पंचम वलये कमले पुष्पाजलि क्षिपेत।)

स्थापना

शांतीनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ॥

दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

तीन पीठिका युक्त सिंहासन, रत्न जड़ित है कान्तीमान।
कमलाशन के ऊपर श्रीजिन, स्वर्णिम तन है आभावान॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥35॥

ॐ ह्रीं सर्वजनपूज्यपददायकाय सिंहासनमहाप्रातिहार्य गुणमण्डिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरने वाला शोक जगत का, तरु अशोक कहलाता है।
पृथ्वी कायिक होता फिर भी, तरु की संज्ञा पाता है॥

समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥36॥

ॐ ह्रीं संपूर्णशोकनिवारणसमर्थाय अशोकवृक्षमहाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय सामोद स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता की झालर से मण्डित, उज्ज्वल छत्र शोभते तीन।
तीन लोक की प्रभुता को जो, दिखलाने में रहे प्रवीन॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥37॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनसौख्यसाधनकराय छत्र त्रयमहाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पीछे बना मनोहर, तेजस्वी शुभ भामण्डल।
कान्तिमान द्रव्यों का मानो, हो जाता है खण्डित बल॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥38॥

ॐ ह्रीं स्वात्मप्रभाविस्तारकाय भामंडलमहाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दिव्य ध्वनि जिनकी शुभ, तीन लोक दर्शाती है।
भव्य जीव के मन मधुकर को, बार-बार हर्षाती है॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥39॥

ॐ ह्रीं असंख्यप्राणिगणानुग्रहकारकाय द्वादशगणवेष्टितमहाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व मुखी पुष्पों की वृष्टी, सुरगण करते भाव विभोर।
परम सुगन्धि महक रही है, प्रभु के आगे चारों ओर॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥40॥

ॐ ह्रीं गुणसुरभिप्रसारकाय सुरपुष्पवृष्टि महाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय श्री संकट मोचन शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य वाद्य बजते हैं मनहर, देव दुन्दुभी कहलाती।
चतुर्दिशाओं को आभा से, सर्व लोक में महकाती॥

समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।41।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावकाय देवदुंदुभि महाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय श्री संकट मोचन शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुराते मनहर, प्रभु के आगे दोनों ओर।
रत्नजड़ित हैं महिमा मण्डित, करते मन को भाव विभोर।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।42।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःप्रियकराय चतुःषष्टिचामरमहाप्रतिहार्य गुणमण्डिताय श्री संकट मोचन शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(चौपाई)

प्रातिहार्य प्रगटाए अष्ट, मिटा रहे इस जग के कष्ट।
प्रभु की भक्ती अपरम्पार, करने वाली भव से पार।।
शांती जिन तीर्थेश महान, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष प्रभृति चतुः षष्ठि चामर पर्यन्त अष्ट महाप्रातिहार्य समन्विताय मनोवाञ्छित फल प्रदाय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शांतये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलिक्षिपेत)

षष्टम वलयः

दोहा– दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनदेव।
पुष्पाञ्जलि से पूजकर, करूँ चरण की सेव।।

(अथ षष्ठम वलये कमले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

शान्तिनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ!
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ।।

दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य

(चाल छन्द)

जो कर्म घातिया नाशे, अरु केवलज्ञान प्रकाशे।
वह क्षुधा व्याधि को खोवे, न कवलाहारी होवे।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।1।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसंतुष्टिकारकाय क्षुधामहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाती कर्म नशावें, अरु केवलज्ञान जगावें।
वह तृषा वेदना खोवें, वे व्याकुल कभी न होवें।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।2।।

ॐ ह्रीं संसारसंतापनिवारकाय तृषामहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव बाधाएँ जीते, नित आत्मसरस को पीते।
प्रभु अन्तिम जन्म को पाए, उनके गुण हमने गाए।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तभयविरहितनिर्दोषसम्यक्त्वप्रदाय भयमहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा रोग को नाशा, न रही कोई भी आशा।
उनकी हम महिमा गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।4।।

ॐ ह्रीं क्षमाभावप्रदायकाय क्रोधमहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक द्रव्य घनेरे, अध्रुव सब कोई न मेरे।
प्रभु विस्मय कभी न करते, न आह कभी भी भरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।5।।

ॐ ह्रीं स्वात्मचिंतनबुद्धिप्रदाय चिन्तामहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न शत्रू कोई हमारे, हम हैं इस जग से न्यारे।
यह जान अरति न करते, जन जन में समता धरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।6।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकदिव्यदेहप्रदाय जरामहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर है जग सारा, इसमें न कोई हमारा।
यह जान खेद न करते, समता में सदा विचरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।7।।

ॐ ह्रीं सरागवीतरागसम्यक्त्वप्रदाय रागमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कई दोष भरे हैं, चेतन से पूर्ण परे हैं।
प्रभु रोग दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।8।।

ॐ ह्रीं बहिरात्माबुद्धिनिवारकाय मोहमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको न वियोग सतावे, नित शांत भाव को पावें।
प्रभु शोक दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।

हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे॥9॥

ॐ ह्रीं नानाव्याधिनिवारणसमर्थाय रोगमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिक आठ महामद, जो नाश पाए उत्तम पद।
प्रभु-मद से हीन कहे हैं, उनके न दोष रहे हैं॥
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे॥10॥

ॐ ह्रीं यमराजजयबुद्धिप्रदाय मृत्युमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महाबलशाली, जिसकी है कथा निराली।
प्रभु मोह महामद नाशी, हैं सम्यक्ज्ञान प्रकाशी॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥11॥

ॐ ह्रीं शरीरश्रमापनुदनयुक्तिप्रदाय स्वेदमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सात महाभय भारी, जिससे हैं जीव दुखारी।
प्रभु ने भय सभी भगाए, अरु निर्भयता को पाए॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥12॥

ॐ ह्रीं परमाल्हादसौख्यप्रदायकाय विषादमहादोषविरहिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूले निद्रा में प्राणी, यह कहती है जिनवाणी।
प्रभु हैं निद्रा से खाली, जो हैं अति-महिमाशाली॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥13॥

ॐ ह्रीं अष्टविधमदनिवारणबुद्धिप्रदायकाय मदमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता तो चिता कही है, प्राणी को सता रही है।
प्रभु चिन्ता कभी न करते, औरों की चिंता हरते॥

जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥14॥

ॐ ह्रीं स्वात्मरमणबुद्धिप्रदायकाय रतिमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन परमौदारिक पाये, उससे न स्वेद बहाए।
प्रभु स्वेद दोष से खाली, जग में अति महिमाशाली॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥15॥

ॐ ह्रीं परमाश्चर्यस्वरूपसिद्धिपदसाधनकराय विस्मयमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारे, हैं जग में जग से न्यारे।
जो राग-दोष को छोड़े, जग जन से मुख भी मोड़े॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥16॥

ॐ ह्रीं मुक्तिपदसाधननालस्यनिवारकाय निद्रामहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध कषाय के नाशी, प्रभु निज आतम के वासी।
प्रभु द्वेष भाव निरवारें, सब कर्म शत्रु भी हारें॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥17॥

ॐ ह्रीं पुनः पुनर्भवनिवारकाय जन्ममहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दश प्राणों के नाशी, हैं अजर अमर अविनाशी।
जो मरण रोग परिहारे, प्रभु नाशे कर्म हैं सारे॥
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते॥18॥

ॐ ह्रीं द्वेषबुद्धिनाशनयुक्तिप्रदाय अरतिमहादोषविवर्जिताय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– दोष अठारह रहित हैं, शान्तिनाथ भगवान।
पूजा करके भाव से, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अष्टादश महादोष विरहिताय मनोवाञ्छितफलप्रदाय संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलिक्षिपेत्)

सप्तम वलयः

दोहा– शान्तिनाथ जिन के हुए, गणधर ऋषि छत्तीस।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।

(अथ सप्तमदले कमले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

शांतीनाथ शांती के दाता, मान रहे यह जग के जीव।
विशद भाव से अर्चा करके, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।
उभय लोक में शांती पाने, पूजा करते हम हे नाथ!
तीन योग से चरण कमल में, झुका रहे हैं अपना माथ।।

दोहा– भाव सुमन लेकर प्रभू, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आपका, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मनोकामनासिद्धिकारक परम शान्तिप्रदायक संकट मोचन श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(छत्तिस गणधर के अर्घ्य)

(छन्द जोगीरासा)

गणधर प्रथम् रहा ''चक्रायुध' दिव्य देशना पाए।
शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मत चक्रायुध गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''श्रृंगनाथ'' गणधर श्री जिनके, पद में शीश झुकाए।
शान्तिनाथ की भक्ती में नित, अपना ध्यान लगाए।।
अष्टद्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मत श्रृंगनाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''सिद्धनाथ'' निज गुण की सिद्धी, पाने जिन को ध्याये।
जिन चरणों में विनय भाव से, सादर शीश झुकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मत सिद्धनाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''अदिते'' गणधर की कान्ती लख, सूरज भी शर्माए।
महिमा कहने में ज्ञानी जन, ना समर्थ हो पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मत अदिते गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''अक्षत'' गणधर की कांती है, अक्षत सम शुभकारी।
चार ज्ञान पाएँ जो तुमने, जिनवर की बलिहारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मत अक्षत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ का गणधर भाई, 'दुर्योधन' कहलाए।
भक्ती जिसकी रही अलौकिक, महिमा कही न जाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मत दुर्योधन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

गणराज 'तपोधन आए, जो संयम तप अपनाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मत तपोधन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल बुद्धी जो पाए, गणधर 'निर्मलोत' कहाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।8।।
ॐ ह्रीं श्री मत निर्मलोत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''पाण्डू'' शुभकारी, है कांति स्वर्ण सी प्यारी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।9।।
ॐ ह्रीं श्री मत पाण्डु गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणराज ''शान्ती'' कहलाए, जो शान्ती हृदय में पाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।10।।
ॐ ह्रीं श्री मत शान्ति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भरत क्षेत्र के वासी, गणराज ''भरत'' सुख राशी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।11।।
ॐ ह्रीं श्री मत भरत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणराज ''नवाक्ष'' कहाए, जो अक्ष जयी कहलाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।12।।
ॐ ह्रीं श्री मत नवाक्ष गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों सिंह पराक्रम पाए, गणराज ''सिंह'' ज्यो गाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।13।।
ॐ ह्रीं श्री मत सिंह गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

है कण्ठ में जिनवर वाणी, गणराज ''कंठ'' हैं ज्ञानी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।14।।
ॐ ह्रीं श्री मत कंठ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुस्वर कंठ को पाए, गणराज ''सुकंठ'' कहाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।15।।
ॐ ह्रीं श्री मत सुकंठ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''प्रहलाद'' नाम के धारी, गणधर हैं मुनि अनगारी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।।16।।
ॐ ह्रीं श्री मत प्रहलाद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''चौपाई''

गणधर कहे ''दयोखिल'' भाई, जिनकी महिमा जग ने गाई।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मत दयोखिल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''भुवन'' नाम गणधर का गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।18।।

ॐ ह्रीं श्री मत भुवन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोष पलायन करते सारे, गणी ''पलायन'' रहे हमारे।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मत पलायन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''विस्वाभर'' की महिमा न्यारी, गुण गावे यह दुनिया सारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मत विस्वाभर गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''विश्वलोक'' गणधर अविकारी, अर्चा करते जिन की प्यारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।21।।

ॐ ह्रीं श्री मत विश्वलोक गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''खिन्नत'' हैं गणराज निराले, रत्नत्रय शुभ पाने वाले।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।22।।

ॐ ह्रीं श्री मत खिन्नत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यू काल होय क्षत भाई, हैं ''क्षतकाल'' गणी सुखदायी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।23।।

ॐ ह्रीं श्री मत क्षतकाल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''लिंगन'' दोष निवारी, शिव पथ के राही अनगारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।24।।

ॐ ह्रीं श्री मत लिंगन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर हैं ''बलिभद्र'' निराले, मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।24।।
ॐ ह्रीं श्री मत बलिभद्र गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
''ह्मगत'' की रंगत शुभकारी, जिसमें रंगी है दुनिया सारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।।26।।
ॐ ह्रीं श्री मत ह्मगत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

गणराज ''वकानन'' हैं महान, जो करें प्रभु का नित्य ध्यान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।27।।
ॐ ह्रीं श्री मत वकानन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
उत्पन्न किए जो चार ज्ञान, ''उत्पन्न'' कहे गणधर महान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।28।।
ॐ ह्रीं श्री मत उत्पन्न गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गणधर ''अनंत'' केवल मुनीश, नित झुका रहे जिन चरण शीश
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।29।।
ॐ ह्रीं श्री मत अनंत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
''संश्रृत'' करते हैं नित्य ध्यान, जो पाना चाहें विशद ज्ञान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।30।।
ॐ ह्रीं श्री मत संश्रृत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
''संवल'' के बल का नहीं पार, जिनने संयम को लिया धार।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।31।।
ॐ ह्रीं श्री मत संवल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गणधर ''कालिद'' हैं ज्ञानवंत, करने वाले हैं कर्म अंत।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।32।।
ॐ ह्रीं श्री मत कालिद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
''उग्गवता'' तप को लिए धार, जो सुतप से करते कर्मक्षार।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।।33।।
ॐ ह्रीं श्री मत उग्गवता गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

"मुक्तामणि" मोती के समान, जो प्राप्त किए हैं चार ज्ञान
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करे ईश॥34॥
ॐ ह्रीं श्री मत मुक्तामणि गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गणधर हैं "सम्यक्नाथ" आप, जो करें प्रभु का नाम जाप।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करे ईश॥35॥
ॐ ह्रीं श्री मत सम्यक्नाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
कहलाए "जिनेन्द्र" केवल गणीश, जो धरें प्रभू पद विनत शीश।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश॥36॥
ॐ ह्रीं श्री मत जिनेन्द्र गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा– शान्तिनाथ भगवान के, गणधर हैं छत्तीश।
करते हैं हम वन्दना, चरणों में धर शीश॥
ॐ ह्रीं सामोद स्थित श्री शान्तिनाथस्य गणधर समूहेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।
समुच्चय जाप–ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सूर्य चाँद जब तक रहें, जब तक भू पाताल।
शान्तिनाथ जयवन्त हों, गाते हम जयमाल॥

राधेश्याम छन्द

ऋषि मुनि यति गणराज नराधिप, जिनकी महिमा गाते हैं।
श्री शान्तिनाथ जिनराज आपके, चरणों शीश झुकाते हैं॥
जो ध्यान आपका करते हैं, वह विशद शान्ति को पाते हैं।
जो शरणागत बनके आते, उन सब के दुख मिट जाते हैं॥
बैसाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, प्रभु गर्भ कल्याणक पाए थे।
देवों ने पन्द्रह माह जहाँ, शुभ दिव्य रत्न वर्षाए थे॥
फिर पौष कृष्ण एकादशी को, श्री शान्तिनाथ ने जन्म लिया।
सौधर्म इन्द्र ने मेरू पर, ले जाकर के अभिषेक किया॥
जय करके स्वर्ग से प्रभु तुमने, तीर्थंकर जन्म को पाया था।
देवों ने गजपुर नगरी को, आकर के स्वर्ग बनाया था॥

हे नाथ! स्वयं आपने भेद ज्ञान, पाकर के निज को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप पहिचाना है॥
तिथि पौष कृष्ण की एकादशि, को उत्तम संयम पाया था।
दीक्षा लेकर आध्यात्मिक पथ, हे नाथ स्वयं अपनाया था॥
तुमने प्रभु दर्श अनन्त ज्ञान, सुख बल अनन्त भी पाया है।
अपनी सुगन्ध सौरभ द्वारा, इस पृथ्वी तल को महकाया है॥
जिसने भी शरण आपकी ली, वह इच्छित फल सब पाए हैं।
शिव पथ के राही बने जीव, अपना सौभाग्य जगाए हैं॥

दोहा– ''हे प्रभु तव आशीष से, शांती हो चहुँ ओर
शरणागत पर ना चले, विशद कर्म का जोर॥''

ॐ ह्रीं मनोकामना सिद्धि कारक परमशान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निर्मल गुण के कोष तुम, निर्मलतम है रूप।
निर्मल जीवन मम बने, पाएँ निज स्वरूप॥

''इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्''

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते त्रिनगर नाम नगरे स्थित 1008 श्री नेमिनाथ जिन् चैत्यालय मध्ये श्री समवशरण विधान अवसरे निर्वाण सम्वत् 2540 वि.सं. 2070 पौष मासे कृष्णपक्षे बारस रविवासरे श्री संकटमोचन शान्तिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
तीर्थंकर के शांति जिन, का करते गुणगान।
चालीसा गाते विशद, करके चरण प्रणाम॥

चौपाई

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग में न्यारी॥
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए॥1॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभू जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥2॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक काराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया॥
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम कहाया।
पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए॥3॥
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए॥
सहस्र छियानवे रानी गाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया॥4॥
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया॥
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी॥5॥

एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो॥
आत्म ध्यान कीन्हे तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई॥6॥
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए॥
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई॥7॥
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो॥
नौ सौ मुनी श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया॥8॥
कूट कुन्दप्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले॥
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोक-शोक दारिद्र नशाए॥9॥
शांतिनाथ शांती के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए॥
पूजा अर्चा कर जो ध्यावें, सुख शांती सौभाग्य जगावे।
'विशद' भाव से जिन गुण गाएँ, हम भी शिव पदवी को पाएँ॥10॥

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ॥
दीन दारिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण॥11॥शांती॥

1008 श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

जगमग जगमग आरति कीजे, शान्ति नाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की॥टेक॥
नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए थे।
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे॥
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की॥
जगमग-जगमग...॥1॥

जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी।
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी॥
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की-।
जगमग-जगमग...॥2॥

हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं।
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं॥
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की-।
जगमग-जगमग...॥3॥

'विशद' भाव से ध्याने वाले, इच्छित फल को पाते हैं।
जिन गुण गाने वाले मानव, निज सौभाग्य जगाते हैं॥
फैल रही जग में प्रभुताई, अतिशय महिमावान की-।
जगमग-जगमग...॥4॥

भक्ती से यह भक्त आपके, आरति करने आए हैं।
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए हैं॥
करें सभी मिल जय जय कारे, पावन पूत महान की-।
जगमग-जगमग...॥5॥